Volume 2, Issue 5 May 2016 ISSN NO: 2454 - 9827

North Asian International Research Journal Consortium

North Asian International Research Journal of Social Science & Humanities

Chief Editor

Dr Rama Singh

Publisher

Dr. Bilal Ahmad Malik

Associate Editor

Dr. Nagendra Mani Trapathi

Honorary

Dr. Ashak Hussain Malik

Welcome to NAIRJC

ISSN NO: 2454 - 9827

North Asian International Research Journal Social Science and Humanities is a research journal, published monthly in English, Hindi, Urdu all research papers submitted to the journal will be double-blind peer reviewed referred by members of the editorial board. Readers will include investigator in Universities, Research Institutes Government and Industry with research interest in the general subjects

Editorial Board

J.Anil Kumar Head Geography University of Thirvanathpuram	Sanjuket Das Head Economics Samplpur University	Adgaonkar Ganesh Dept. of Commerce B.S.A.U, Aruganbad
Kiran Mishra Dept. of Englig,Ranchi University, Jharkhand	Somanath Reddy Dept. of Social Work, Gulbarga University.	Rajpal Choudhary Dept. Govt. Engg. College Bikaner Rajasthan
R.D. Sharma Head Commerce & Management Jammu University	R.P. Pandday Head Education Dr. C.V.Raman University	Moinuddin Khan Dept. of Botany SinghaniyaUniversity Rajasthan.
Manish Mishra Dept. of Engg, United College Ald.UPTU Lucknow	K.M Bhandarkar Praful Patel College of Education, Gondia	Ravi Kumar Pandey Director, H.I.M.T, Allahabad
Tihar Pandit Dept. of Environmental Science, University of Kashmir.	Simnani Dept. of Political Science, Govt. Degree College Pulwama, University of Kashmir.	Ashok D. Wagh Head PG. Dept. of Accountancy, B.N.N.College, Bhiwandi, Thane, Maharashtra.
Neelam Yaday Head Exam. Mat.K..M .Patel College Thakurli (E), Thane, Maharashtra	Nisar Hussain Dept. of Medicine A.I. Medical College (U.P) Kanpur University	M.C.P. Singh Head Information Technology Dr C.V. Rama University
Ashak Husssain Head Pol-Science G.B, PG College Ald. Kanpur University	Khagendra Nath Sethi Head Dept. of History Sambalpur University.	Rama Singh Dept. of Political Science A.K.D College, Ald.University of Allahabad

Address: - Dr. Ashak Hussain Malik House No. 221 Gangoo, Pulwama, Jammu and Kashmir, India - 192301, Cell: 09086405302, 09906662570, Ph. No: 01933-212815,
Email: nairjc5@gmail.com , nairjc@nairjc.com , info@nairjc.com Website: www.nairjc.com

IRJIF IMPACT FACTOR: 2.88

माध्यमिक स्तर पर अनुसूचित जाति एवं पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि व समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

प्राची राजपूत[1] एवं डॉ. देवेन्द्र सिंह[2]

[1.] प्राध्यापक, सूर्या एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट, मथुरा;

[2]प्राध्यापक, सूर्या एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट, मथुरा

संक्षिप्तिका

वर्तमान अध्ययन में शोधार्थी ने माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित जाति एवं पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि व समायोजन पर सामाजिक आर्थिक स्थिति के प्रभाव का अध्ययन किया। न्यादर्श के रूप में शोधार्थी द्वारा फिरोजाबाद जनपद से कुल 1000 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक विधि से किया। अध्ययन में सामाजिक आर्थिक स्थिति को स्वतन्त्र चर के रूप में तथा शैक्षिक उपलब्धि व समायोजन को परतन्त्र चर के रूप में सम्मिलित किया गया। अध्ययन हेतु वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। प्रदत्तों के विश्लेषण के उपरान्तअनुसूचित जाति एवं पिछड़ी जाति के छात्रों के सामाजिक आर्थिक स्तर के अनुसार शैक्षिक उपलब्धि व समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

प्रस्तावना :

किसी भी राष्ट्र की उन्नति एवं विकास में वहां के मानव संसाधन अत्यन्त उपयोगी है।अतः यह आवश्यक है कि मानव निर्माण की अवस्था में इसका पालन–पोषण एवं विकास अत्यधिक सावधानीपूर्वक किए जाने की आवश्यकता है। किसी भी राष्ट्र की उन्नति में वहां की शिक्षित जनसंख्या का विशेष योगदान होता है। देश की साक्षरता दर जितनी अधिक होती है वहां के नागरिकों की जीवन प्रत्याशा उनती ही उच्च होती है। मानव निर्माण की प्रक्रिया बालक के जन्म से प्रारम्भ होती है और माध्यमिक स्तर पर जब बालक विद्यालय में प्रवेश करता है तो वह आत्मविश्वास से लवरेज होता है और भविष्य की प्रति उसकी आकांक्षायें सर्वोच्च स्तर पर होती हैं। अतः इस स्तर पर शैक्षिक प्रक्रिया भी अत्यधिक सावधानीपूर्वक विस्तृत एवं विविधतापूर्वक योजना बनाने और बड़े मनोयोग से संचालित

करने की आवश्यकता है। यह पहली सीढ़ी है जिसे सफलतापूर्वक पार करने के बाद बालक का अपने लक्ष्य प्राप्ति की दिशा में अग्रसर होना सुनिश्चित होता है।

भारत में अनुसूचित जाति की कानूनी लड़ाई लड़ने का जिम्मा सबसे सशक्त रूप में डॉ0 अम्बेडकर ने उठाया। डॉ0 अम्बेडकर दलित समाज के प्रणेता हैं। बाबा साहब अम्बेडकर ने सबसे पहले देश में अनुसूचित के लिए सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक अधिकारों की पैरवी की। भारतीय समाज के तात्कालिक स्वरूप का विरोध और समाज के सबसे पिछड़े और तिरस्कृत लोगों के अधिकारों की बात की। राजनीतिक और सामाजिक हर रूप में इसका विरोध स्वाभाविक था। यहाँ तक की महात्मा गाँधी भी इन मांगों के विरोध में कूद पड़े। बाबा साहब ने मांग की कि दलितों को अलग प्रतिनिधित्व (पृथक निर्वाचिका) मिलना चाहिए यह दलित राजनीति में आज तक की सबसे सशक्त और प्रबल मांग थी। अम्बेडकर की प्रयासों का ही ये परिणाम है कि दलितों के अधिकारों को भारतीय संविधान में जगह दी गई। यहां तक कि संविधान के मौलिक अधिकारों के जरिए भी अनुसूचित जाति के अधिकारों की रक्षा करने की कोशिश की गई।

भारत में अनुसूचित जनजातियों से संबंधित कई प्रावधान हैं। मुख्यतः इन्हें दो भागों में बांटा जा सकता है– सुरक्षा तथा विकास। अनुसूचित जनजातियों की सुरक्षा संबंधी प्रावधान संविधान के अनुच्छेद 15(4), 16(4), 19(5), 23, 29, 46, 164, 330, 332, 334, 335 व 338, 339(1), 371 (क) (ख) व (ग), पांचवी सूची व छठी सूची में निहित हैं। अनुसूचित जनजातियों के विकास से संबंधित प्रावधान मुख्य रूप से अनुच्छेद 275(1) प्रथम उपबंध तथा 339(2) में निहित हैं। इस समय भारत में अनुसूचित जनजातियों की संख्या 700 से ऊपर हैं।

अनुसूचित जाति एवं जनजाति आदेशानुसार (1956) के अनुसार– ''अनुसूचित जाति एवं जनजाति की पहचान सम्पूर्ण भारत में 15 प्रतिशत अनुसूचित जाति तथा 7.5 प्रतिशत अनुसूचित जनजाति के रूप में की गयी है। भिन्न–भिन्न राज्यों में अनुसूचित जाति एवं जनजातियों की संख्या भिन्न–भिन्न है। सरकार ने इसी अनुपात में इन जातियों के उत्थान के लिये शैक्षिक संस्थाओं, सरकारी नौकरियों, व्यवसायिक पाठ्यक्रमों, वित्तीय संस्थाओं में आरक्षण की व्यवस्था की है।

अनुसूचित जाति एवं पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का प्रभाव, उनकी शैक्षिक उपलब्धि समायोजन एवं आकांक्षा स्तर पर दिखायी देता है क्योंकि उनके अभिभावकों के व्यवसाय, शिक्षा एवं आजीविका का प्रभाव उनकी उपलब्धि, समायोजन व आकांक्षा स्तर को प्रभावित करता है। ज्ञानानी, टी.सी. (1996),

अग्रवाल (2002), अग्रवाल, सुभाषचन्द्र (2005), दीक्षित (2005) इत्यादि ने अपने अध्ययन में पाया कि अनुसूचित जाति व पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर के मध्य भी अन्तर दिखायी पड़ता है।

इन अध्ययनों से स्पष्ट है कि विद्यार्थियों की उपलब्धि व समायोजन में सामाजिक–आर्थिक स्तर एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है, अनुसूचित जाति एवं पिछड़ी जातियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर तथा उपलब्धि में भी समाज के अन्य वर्गों से पर्याप्त अन्तर दृष्टिगत होता है जबकि समाज व सरकार का इन पर विशेष ध्यान है कि ये अपना उत्थान करें। ऐसे कौन से कारक हैं कि इतने आयोगों व संगठनों के बनने के फलस्वरूप यह समस्या खत्म क्यों नहीं हो पा रही है ? आज पुनः इन बिन्दुओं पर अध्ययन करने की आवश्यकता महसूस की जा रही है।

समस्या कथन :

माध्यमिक स्तर पर अनुसूचित जाति एवं पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि व समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

प्रयुक्त चरों की व्याख्या :

माध्यमिक स्तर :

प्रस्तुत अध्ययन माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत वे छात्र हैं जोकक्षा 10 की बोर्ड परीक्षा उत्तीर्ण कर कक्षा 11वीं मेंशिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

अनुसूचित जाति :

संविधान (अनुसूचित जाति) के आदेश 1950 के अनुसार–उन व्यक्तियों का संगठन (समूह) जो छूआछूत से ग्रस्त है तथा जिन्हें निम्न जाति, दलित, हरिजन आदि नामों से जाना जाता है तथा वे मिश्रित जनसंख्या वाले तथा विभिन्न भाषाओं को बोलते हैं।

पिछड़ी जाति :

वर्तमान में पिछड़ी जाति कुल आबादी का लगभग 27: है। मण्डल कमीशन (1976) के अनुसार पिछड़ी जाति उन लोगों या जातियों के लिए प्रयोग में आया जोकि आर्थिक स्तर, सामाजिक स्तर एवं शिक्षा के स्तर में पिछड़े हैं और उन्हें जन्म के आधार पर बांट दिया गया।

शैक्षिक उपलब्धि :

शैक्षिक उपलब्धि का अर्थ ज्ञान के किसी क्षेत्र में प्राप्त दक्षता का स्तर इसे साधारणतयः विद्यालय परीक्षा द्वारा प्राप्तांकों के रूप में व्यक्त किया जाता है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शैक्षिक उपलब्धि का तात्पर्य दसवीं कक्षा को पास करने के पश्चात् कुल प्राप्तांको का योग एवं प्रतिशत से है, जो विद्यालय के विभिन्न पाठ्य विषयों में प्राप्त उपलब्धि है, जिसका मापन छात्र द्वारा बोर्ड से प्राप्त श्रेणी अथवा अंको के प्रतिशत/योग द्वारा किया जाता है।

समायोजन :

साधारण शब्दों में 'व्यक्ति का अपने वातावरण के साथ अनुकूलन ही समायोजन है।'

बोरिंग, लैंगफेल्ड व वेल्ड (1976) 'समायोजन वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा प्राणी अपनी आवश्यकताओं और इन आवश्यकताओं की पूर्ति को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों में सन्तुलन रखता है।''

उद्देश्य :

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य इस प्रकार हैं–

1. अनुसूचित जाति एवं पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों के सामाजिक– आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2. अनुसूचित जाति एवं पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों के समायोजन स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना

1. अनुसूचित जाति एवं पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई अन्तर नहीं है।

2. अनुसूचित एवं पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों के समायोजन स्तर में कोई अन्तर नहीं होता है।

चर

प्रस्तुत अध्ययन में सामाजिक आर्थिक स्तर को स्वतन्त्र चर के रूप में एवं शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन को आश्रित चर के रूप में लिया गया है।

विधि

प्रस्तुत अध्ययन हेतु शोधार्थिनी द्वारा वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन हेतु शोधार्थिनी ने फिरोजाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों से 500 अनुसूचित जाति एवं 500 पिछड़ी जाति के बालकों का यादृच्छिक विधि से चयन किया।

प्रदत्तों का विश्लेषण

संकलित प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु शोधार्थी द्वारा मध्यमान, मानक विचलन, क्रान्तिक अनुपात एवं एक मार्गीय प्रसरण विश्लेषण की गणना माइक्रोसॉफ्ट एक्सल वर्जन का प्रयोग कर की गई।

उद्देश्य सं. 01 :

अनुसूचित जाति एवं पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन।

अनुसूचित जाति एवं पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर सामाजिक आर्थिक स्तर के प्रभाव को जानने के लिए शोधार्थी द्वारा छात्रों के कक्षा 10 के बोर्ड परीक्षा प्राप्तांकों की प्रसरण विश्लेषण द्वारा गणना की गई जिसका विवरण निम्न तालिका 01 में प्रस्तुत है।

तालिकासं. 01

अनुसूचित जाति एवं पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों की सामाजिक आर्थिक स्थिति का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का प्रसरण विश्लेषण का विवरण

प्रसरण का स्रोत	वर्गों का योग	स्वतन्त्रता अंश	वर्गों का मध्यमान	प्रसरण गुणांक
समूहों के बीच	253ण्138	2	126ण्569	1ण्603
समूहों के साथ	78716ण्42	997	78ण्953	
सम्पूर्ण	78969ण्56	999		

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि सामाजिक आर्थिक स्थिति के विभिन्न स्तरों पर समूहों के मध्य वर्गों का योग 253.38 व समूहों के साथ 78716.42 प्राप्त हुआ। इस सम्बन्ध में गणना किया गया प्रसरण विश्लेषण का मान 1.603 प्राप्त हुआ जो स्वतन्त्रता अंश (2, 997) पर तालिका मान 5.99 से कम पाया गया। अर्थात यह प्रभाव .05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं पाया गया। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि अनुसूचित जाति व पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ रहा है। इस सन्दर्भ में हुए अध्ययन गुप्ता, मंजू (1975–76), श्रीवास्तव एन (1980), सिंह, नरेन्द्र प्रताप (1998), पाल, देवेन (2005) व मैरिसन मैथ (2005) भी परिणामों की पुष्टि कर रहे हैं।

उद्देश्य सं. 02 :

अनुसूचित जाति एवं पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक स्तर एवं समायोजन के मध्य तुलनात्मक अध्ययन

अनुसूचित जाति एवं पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक स्तरानुसार समायोजन के मध्य तुलनात्मक अध्ययन के लिए सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया जो निम्न तालिका में प्रस्तुत है–

तालिका सं. 02 :

अनुसूचित जाति एवं पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक स्थिति के स्तरानुसार संवेगात्मक समायोजन के मध्यमान, मानक विचलन व सी.आर. मान

समाजिक आर्थिक स्तर	संवेगात्मक समायोजन						सी.आर. मान
	अनुसूचित जाति			पिछड़ी जाति			
	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	
उच्च स्तर	27	10ण्15	5ण्44	49	9ण्00	3ण्27	1ण्003
औसत स्तर	433	9ण्50	4ण्01	415	8ण्78	3ण्21	2ण्892′
निम्न स्तर	40	8ण्60	1ण्50	36	8ण्64	2ण्60	0ण्081

उपरोक्त तालिका के अवलोकन के अनुसार उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर वाले अनुसूचित जाति एवं पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन के मध्यमान क्रमशः 10.15 व 9.00 प्राप्त हुए। तालिका से यह भी स्पष्ट है कि अनुसूचित जाति के उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर वाले विद्यार्थियों का संवेगात्मक समयोजन पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों से उच्च प्राप्त हुआ। इस सम्बन्ध में क्रान्तिक अनुपात मान की गणना की गई जो 1.003 प्राप्त हुआ वह 0. 05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं पाया गया।

औसत सामाजिक आर्थिक स्तर वाले अनुसूचित जाति एवं पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन का मध्यमान क्रमशः 9.50 व 8.78 प्राप्त हुआ। परिणामों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि औसत सामाजिक

आर्थिक स्तर वाले अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों का संवेगात्मक समायोजन पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च पाया गया। इस सम्बन्ध में क्रान्तिक अनुपात मान की गणना की गई। जो मान 2.892 प्राप्त हुआ वह 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक पाया गया।

निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर वाले अनुसूचित जाति एवं पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन का मध्यमान क्रमशः 8.60 व 8.64 प्राप्त हुआ। परिणामों के विश्लेषण से निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर वाले पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों का संवेगात्मक समायोजन अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च पाया गया। इस सम्बन्ध में क्रान्तिक अनुपात मान की गणना की गई। गणना से जो मान 0.081 प्राप्त हुआ वह 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं पाया गया।

तालिका के गहन विश्लेषण से स्पष्ट है कि उच्च एवं औसत सामाजिक आर्थिक स्तर वाले अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों का संवेगात्मक समायोजन पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों विद्यार्थियों से उच्च है। अर्थात् शिक्षा के विकास एवं शिक्षा के प्रति रुचि व जागरूकता ने अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन में वृद्धि हुई। केवल निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर वाले अनुसूचित जाति व पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों का संवेगात्मक समायोजन सामान्य स्तरीय है। अतः यह भी शैक्षिक प्रयासों के कारण ही सम्भव है।

निष्कर्ष

अनुसूचित जाति एवं पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक स्थिति के विभिन्न स्तरों पर समूहों के मध्य गणना किया गया प्रसरण विश्लेषण की गणना की गई। विश्लेषण के पश्चात जो मान 1.603 प्राप्त हुआ वह स्वतन्त्रता अंश (2, 997) के लिए तालिका मान 5.99 से कम पाया गया। अतः अनुसूचित जाति एवं पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव नहीं पड़ रहा है। अर्थात सरकार द्वारा किये गये प्रयासों का लाभ पूर्ण रूप से हो रहा है। इस कारण दोनों की शैक्षिक उपलब्धि समान है।

अतः इस सन्दर्भ में निर्मित शून्य परिकल्पना 'अनुसूचित जाति एवं पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई अन्तर नहीं है' स्वीकृत की जाती है।

- अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों का संवेगात्मक सामाजिक एवं शैक्षिक समायोजन पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों की तुलना में उच्च पाया गया। सार्थकता की जांच हेतु गणना किया गया क्रान्तिक अनुपात का मान क्रमशः 2. 998, 2.858 एवं 3.665 प्राप्त हुआ जो सार्थकता के 0.01 स्तर पर सार्थक पाया गया।

➢ **सामाजिक आर्थिक स्थिति के अनुसार संवेगात्मक समायोजन**

- उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर वाले वाले अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों का संवेगात्मक समयोजन पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों से उच्च प्राप्त हुआ। इस सम्बन्ध में गणना किया गया क्रान्तिक अनुपात का मान 1.003 प्राप्त हुआ जो 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं पाया गया।

- औसत सामाजिक आर्थिक स्तर वाले अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों का संवेगात्मक समायोजन पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च पाया गया। इस सम्बन्ध में गणना किया गया क्रान्तिक अनुपात का मान 2.892 प्राप्त हुआ जो 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक पाया गया।

- निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर वाले पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों का संवेगात्मक समायोजन अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च पाया गया। इस सम्बन्ध में गणना किया गया क्रान्तिक अनुपात का मान 0.081 प्राप्त हुआ जो 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं पाया गया।

➢ **सामाजिक आर्थिक स्थिति के अनुसार सामाजिक समायोजन**

- उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर वाले अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों का सामाजिक समयोजन पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों से उच्च प्राप्त हुआ। इस सम्बन्ध में गणना किया गया क्रान्तिक अनुपात का मान 3.754 प्राप्त हुआ जो 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक पाया गया।

- औसत सामाजिक आर्थिक स्तर वाले अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों का सामाजिक समायोजन पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च पाया गया। इस सम्बन्ध में गणना किया गया क्रान्तिक अनुपात का मान 3.420 प्राप्त हुआ जो 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक पाया गया।

- निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर वाले अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों का सामाजिक समायोजन पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च पाया गया। इस सम्बन्ध में गणना किया गया क्रान्तिक अनुपात का मान 1.122 प्राप्त हुआ जो 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं पाया गया।

➢ **सामाजिक आर्थिक स्थिति के अनुसार शैक्षिक समायोजन**

- अनुसूचित जाति के उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर वाले विद्यार्थियों का शैक्षिक समयोजन पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों से उच्च प्राप्त हुआ। इस सम्बन्ध में गणना किया गया क्रान्तिक अनुपात का मान 2.599 प्राप्त हुआ जो 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक पाया गया।

- अनुसूचित जाति के औसत सामाजिक आर्थिक स्तर वाले विद्यार्थियों का शैक्षिक समायोजन पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च पाया गया। इस सम्बन्ध में गणना किया गया क्रान्तिक अनुपात का मान 3.032 प्राप्त हुआ जो 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक पाया गया।
- निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर वाले अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों का शैक्षिक समायोजन पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च पाया गया। इस सम्बन्ध में गणना किया गया क्रान्तिक अनुपात का मान 0.703 प्राप्त हुआ जो 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं पाया गया।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

अरुणा एट अल. (2009) "ऐकेडमिक अचीवमेंट इन रिलेशन टू सोसल फोबिआ एण्ड सोसियो इकोनॉमिक स्टेटस", *बेवसाइट खोज* www.shodhganga.inflibnet.ac.in

बेस्ट, जे. डब्ल्यू(1963). रिसर्च इन एजूकेशन.प्रिन्टिंग हॉल ऑफ इण्डिया (प्रा0) लिमिटेड, मुम्बई.

आलम (2001) "ऐकेडमिक अचीवमेंट इन रिलेशन टू सोसियो इकोनोमिक स्टेटस", एन्जाइटी लेवल एण्ड अचीवमेंट मोटिवेशन, *वेबसाइट खोज* www.shodhganga.inflibnet.ac.in

अनर्जा एट अल. (2003) "द एडजस्टमेंट ऑफ चिल्ड्रेन वर्किंग इन सेफ्टी मेच इंडस्ट्रीज", *वेबसाइट खोज* www.shodhganga. inflibnet.ac.in

जार्ज (1994) "अ कम्परेटिव स्टडी ऑफ एडजस्टमेंट एण्ड अचीवमेंट ऑफ 10 एण्ड 11 ईअर स्कूल स्टूडेंट्स", बेबसाइट खोज www.shodhganga.inflibnet.ac.in

हेलेन (1998) "द डिफरेंस बिटवीन फील्ड डिपेंटेन्ट / फील्ड इनडिपेंटेन्ट कॉग्नेटिव स्टाइल्स ऑफ लो एण्ड हाई अचीवर मेथमेटिक्स स्टूडेंट्स", *वेबसाइट खोज* www.shodhganga. inflibnet.ac.in

जॉयस (1991) "द पर्सनलिटी करेक्टर्सटिक्स विच डिफरेंसिएट अचीवर एण्ड अण्डर अचीवर हाई स्कूल स्टूडेंट्स फ्रॉम सोसियो इकोनॉमिक इनवायरमेंट", *वेबसाइट खोज* www.shodhganga.inflibnet.ac.in

हसीन (1999) "ऐकेडमिक अचीवमेंट एज अ फंक्शन ऑफ सोसल क्लास, पेरेंट चाइल्ड इन्टरेक्शन, डिपेंडेन्सी बिहेविअर एण्ड स्कूल मेनेजमेंट", *वेबसाइट खोज* www.shodhganga. inflibnet.ac.in